SUṢAMĀ : Multidisciplinary Research Journal ISSN: 3107-4529
(International Peer-Reviewed & Refereed Journal)
Vol. 1, Issue-4, (Oct-Dec) 2025

महात्मा गांधी का मानवतावाद: सत्य और अहिंसा की दार्शनिक आधारभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Souvik Halder
Research Scholar
Department of Philosophy
Binod Bihari Mahto Koyalanchal University
Dhanbad, Jharkhand, India
Email: souvikhalder621@gmail.com

Abstract: यह शोधपत्र "महात्मा गांधी का मानवतावाद: सत्य और अहिंसा की दार्शनिक आधारभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन" गांधी दर्शन के नैतिक एवं आध्यात्मिक स्वरूप की विवेचनात्मक पड़ताल करता है। गांधी का मानवतावाद केवल सैद्धांतिक अवधारणा न होकर एक सक्रिय जीवनदर्शन है, जिसकी जड़ें सत्य और अहिंसा के शाश्वत सिद्धांतों में निहित हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि गांधी के लिए 'सत्य' परम मूल्य है, जो मानव जीवन के नैतिक संचालन का केंद्र है, तथा 'अहिंसा' उस सत्य की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। गांधी का मानवतावाद व्यक्ति और समाज के मध्य नैतिक संतुलन स्थापित करता है, जहाँ आत्मा की शुद्धि और लोककल्याण परस्पर पूरक बन जाते हैं। यह शोध यह भी प्रतिपादित करता है कि गांधी के सत्य-अहिंसा आधारित मानवतावाद में धर्म, राजनीति और समाज—तीनों का एकात्मिक दृष्टिकोण विद्यमान है। समकालीन युग में जब हिंसा, उपभोक्तावाद और नैतिक पतन ने मानवता को चुनौती दी है, तब गांधी का यह दर्शन मानव मूल्य पुनर्स्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः यह अध्ययन गांधी के मानवतावादी चिंतन की दार्शनिक गहराई और उसकी वर्तमान प्रासंगिकता दोनों को उद्घाटित करता है।

Keywords: मानवतावाद, भारतीय दर्शन, अहिंसा, नैतिकता, सार्वभौमिक कल्याण, सर्वकेंद्रित दृष्टि, सत्याग्रह।

परिचय--

मानव सभ्यता के विकास की समस्त यात्रा में "मानव" ही चिंतन, मूल्य और नैतिकता का केंद्र रहा है। इतिहास के प्रत्येक युग में मनुष्य ने अपने अस्तित्व, उद्देश्य और मूल्य की खोज की है। इसी खोज की परिणति है *मानवतावाद (Humanism)* — एक ऐसा दार्शनिक दृष्टिकोण जो मनुष्य को सृष्टि का मूल केंद्र और नैतिक सत्ता का धारक मानता है। मानवतावाद का सार यह है कि मनुष्य न केवल ज्ञान का विषय है, बल्कि स्वयं ज्ञान का निर्माता भी है। वह ईश्वर की कृति मात्र नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी वाला जीव है जो अपने कर्मों के माध्यम से समाज, संस्कृति और सभ्यता का निर्माण करता है। प्राचीन भारत से लेकर आधुनिक युग तक, इस विचारधारा ने विविध रूपों में अपनी अभिव्यक्ति दी है — कभी धार्मिक और आध्यात्मिक पृष्ठभूमि में, तो कभी नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में। भारतीय चिंतन में मानव को सदैव दिव्य सत्ता का प्रतिबिंब माना गया है। *"अहं ब्रह्मास्मि"* और *"तत्त्वमसि"* जैसे उपनिषद् वाक्य यह उद्घोष करते हैं कि मनुष्य में वही दिव्यता विद्यमान है जो सम्पूर्ण सृष्टि में व्यापी है। बौद्ध दर्शन

में करुणा और मैत्री के माध्यम से मानवतावाद का सजीव रूप देखने को मिलता है, जबकि जैन दर्शन में *अहिंसा* और *अनेकांतवाद* मानव के प्रति सम्मान और सहिष्णुता की भावना को प्रतिष्ठित करते हैं। इस प्रकार भारतीय दार्शनिक परंपरा ने मानवतावाद को केवल तात्त्विक विचार के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के आचरण में समाहित मूल्य के रूप में देखा। यही परंपरा आगे चलकर आधुनिक युग में महात्मा गांधी के चिंतन में पुनः जागृत होती है।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के संधिकाल में जब औद्योगिक सभ्यता, औपनिवेशिक शोषण और नैतिक पतन के कारण मानवता संकटग्रस्त हो रही थी, तब गांधी ने मानव को पुनः उसकी नैतिक सत्ता के केंद्र में प्रतिष्ठित किया। गांधी के लिए मनुष्य केवल राजनीतिक प्राणी या सामाजिक इकाई नहीं, बल्कि आत्मिक सत्ता है — जो सत्य और अहिंसा के माध्यम से अपनी पूर्णता प्राप्त कर सकती है। उनके अनुसार "मनुष्य की महानता उसके बल में नहीं, बल्कि उसके चरित्र में है।" इस दृष्टि से गांधी का मानवतावाद एक ऐसे नैतिक दर्शन का प्रतिपादन करता है जो व्यक्ति की आत्मा से लेकर समूचे समाज के कल्याण तक का सेतु निर्मित करता है। गांधी के मानवतावाद का मूलाधार "सत्य" और "अहिंसा" हैं। *सत्य* उनके लिए केवल वचन या व्यवहार का गुण नहीं, बल्कि परमात्मा का पर्याय है— "ईश्वर सत्य है" से आगे बढ़कर गांधी ने कहा, "सत्य ही ईश्वर है।" इस प्रकार सत्य उनके मानवतावाद की आध्यात्मिक नींव है, जो मनुष्य को ईश्वर और समाज दोनों के प्रति उत्तरदायी बनाती है। दूसरी ओर *अहिंसा* उस सत्य की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है— ऐसा जीवन-मूल्य जो करुणा, प्रेम और सहयोग पर आधारित है। गांधी के अनुसार अहिंसा "सक्रिय शक्ति" है, जो न केवल दूसरों को क्षति से बचाती है, बल्कि मनुष्य को अपनी सीमाओं से मुक्त कर नैतिक आत्मबल प्रदान करती है। इन दोनों मूल्यों का संगम गांधी के मानवतावाद को एक जीवंत, क्रियाशील और सार्वभौमिक दर्शन बना देता है।

शोध का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि आज का युग, जो तकनीकी प्रगति और भौतिक संपन्नता के बावजूद नैतिक शून्यता और मूल्यहीनता से ग्रस्त है, वहाँ गांधी का मानवतावाद पुनः प्रासंगिक हो उठता है। हिंसा, युद्ध, उपभोक्तावाद, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानता ने मानवता को जिस दिशा में धकेल दिया है, वहाँ गांधी के सत्य-अहिंसा पर आधारित मानवीय दर्शन एक संतुलित नैतिक विकल्प के रूप में उभरता है। गांधी का मानवतावाद केवल व्यक्तिगत सुधार का संदेश नहीं देता, बल्कि सामाजिक पुनर्गठन का भी मार्ग प्रस्तुत करता है। उनके अनुसार "व्यक्ति का उत्थान समाज के उत्थान के बिना अधूरा है"— यह विचार आज के विखंडित और स्वार्थपरक सामाजिक ताने-बाने में अत्यंत सार्थक है। मानवतावाद की अवधारणा के संदर्भ में गांधी का चिंतन पश्चिमी मानवतावाद से भिन्न है। जहाँ पश्चिमी परंपरा में मानवतावाद का केंद्र मानव बुद्धि और तर्क पर आधारित है, वहीं गांधी का मानवतावाद*आत्मा, सत्य, प्रेम और करुणा* पर आधारित है। पश्चिमी मानवतावाद मनुष्य को प्रकृति और ईश्वर से अलग कर स्वतंत्र सत्ता के रूप में देखता है, जबकि गांधी उसे ईश्वर की अभिव्यक्ति और प्रकृति का अंग मानते हैं। इस प्रकार गांधी का मानवतावाद "नैतिक-आध्यात्मिक मानवतावाद" है, जो व्यक्ति के भीतर स्थित दिव्यता को पहचानने और उसके अनुरूप आचरण करने की प्रेरणा देता है। यह दृष्टिकोण "सर्वोदय" अर्थात् "सभी का कल्याण" की भावना पर आधारित है, जहाँ आत्मकल्याण और लोककल्याण एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं।

गांधी के विचार में मानवता का उत्थान केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से संभव नहीं, बल्कि

आत्मानुशासन, संयम और सत्य-अहिंसा के आचरण से ही संभव है। उनके अनुसार, "सच्ची स्वतंत्रता वही है, जो आत्मसंयम से उत्पन्न होती है।" इसलिए गांधी का मानवतावाद व्यक्ति की आंतरिक चेतना से प्रारंभ होकर सामाजिक और वैश्विक चेतना तक विस्तारित होता है। यह एक ऐसी नैतिक प्रणाली है जो हर व्यक्ति को 'स्वयं में सुधार' के माध्यम से समाज में सुधार लाने की दिशा में प्रेरित करती है। इस शोध का उद्देश्य इसी विचार को दार्शनिक दृष्टि से विश्लेषित करना है कि गांधी का मानवतावाद केवल एक सामाजिक या राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि एक व्यापक जीवन-दर्शन है, जिसका केंद्र सत्य और अहिंसा हैं। इन दोनों सिद्धांतों की दार्शनिक आधारभूमि का विवेचन करने से यह स्पष्ट होता है कि गांधी के लिए नैतिकता और अध्यात्म का संबंध अविभाज्य है। उनके मानवतावाद में न केवल ईश्वर और मानव के मध्य संबंध का बोध है, बल्कि समाज के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व की चेतना भी समाहित है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में जब विज्ञान, तकनीक और पूँजी के वर्चस्व ने मनुष्य को साधन बना दिया है, तब गांधी का मानवतावाद मनुष्य को पुनः उद्देश्य के रूप में देखने की प्रेरणा देता है। यह अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है कि आज के समय में सत्य, अहिंसा, करुणा और नैतिक साहस जैसे मूल्य केवल विचार के स्तर पर सीमित न रह जाएँ, बल्कि आचरण में रूपांतरित हों। गांधी का मानवतावाद हमें यह सिखाता है कि मानवता की रक्षा बाहरी सुधारों से नहीं, बल्कि भीतर के नैतिक उत्थान से होती है। इस प्रकार यह शोध न केवल गांधी के मानवतावाद के दार्शनिक पक्ष की पड़ताल करता है, बल्कि यह भी प्रमाणित करता है कि उनके सत्य-अहिंसा आधारित मूल्य आज के समाज के लिए उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे। गांधी का मानवतावाद एक ऐसे सार्वभौमिक नैतिक दर्शन का प्रतिपादन करता है जो समय, देश और संस्कृति की सीमाओं से परे है— एक ऐसा दर्शन जो आज भी मनुष्य को उसकी मानवता का बोध कराता है, और उसे आत्म-परिवर्तन से समाज-परिवर्तन की दिशा में अग्रसर करता है।

गांधी के मानवतावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि—

गांधी का मानवतावाद किसी एक सिद्धांत या धर्म की उपज नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन, नैतिक चेतना और सार्वभौमिक आध्यात्मिक दृष्टि का समन्वित परिणाम है। उनका चिंतन भारतीय मनीषा की उस परंपरा से जुड़ा है जो मनुष्य को आत्मा का रूप और प्रत्येक प्राणी में ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करती है। गांधी के मानवतावाद की जड़ें वैदांतिक, उपनिषदिक, जैन, बौद्ध और गीता-प्रेरित नैतिक परंपराओं में निहित हैं। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि उनके जीवन पर गीता, जैन धर्म, बुद्ध की करुणा और ईसा मसीह के प्रेम का गहरा प्रभाव रहा। गांधी का यह विश्वास उनकी सार्वभौमिक एकात्मता की भावना में परिलक्षित होता है— "*I believe in the essential unity of man and for that matter of all that lives.*"[1] यह कथन स्पष्ट करता है कि गांधी के लिए मानवता केवल सामाजिक संबंध नहीं, बल्कि आत्मिक एकत्व का अनुभव है।

- **भारतीय दार्शनिक परंपरा का प्रभाव—** भारतीय दर्शन में मनुष्य को "अमृतस्य पुत्रः" कहा गया है—अर्थात वह ईश्वर का अंश है। यह विचार गांधी के मानवतावाद में प्रत्यक्ष दिखाई देता है। वे मानते थे कि सभी जीवों में एक ही आत्मा का वास है; इसलिए हिंसा या द्वेष उस सार्वभौमिक चेतना के विरुद्ध है। गांधी के मानवतावाद का मूल भाव "एकात्मता" है, जो उन्हें समस्त प्राणियों के साथ करुणा और सह-अस्तित्व का दृष्टिकोण प्रदान करता है। गांधी ने कहा था, "*The greatness of humanity is not in being human, but in being humane.*"[2] यह कथन उनके

उस नैतिक मानवतावाद को उजागर करता है जो आत्मसंयम और करुणा पर आधारित है। धर्म को उन्होंने पूजा या कर्मकांड नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी और प्रेम के रूप में देखा— "धर्म का अर्थ न्याय और करुणा का आचरण है।" इसीलिए उनका मानवतावाद जीवन और कर्म दोनों का समग्र दर्शन बन गया।

- **गीता, जैन और बौद्ध विचारों का प्रभाव—** गांधी के मानवतावाद की आत्मा गीता के कर्मयोग में निहित है। उन्होंने "कर्मण्येवाधिकारस्ते" और "समत्वं योग उच्यते" के सिद्धांतों को जीवन में उतारा, जहाँ निष्काम कर्म और आत्मसंयम मनुष्य की सच्ची पहचान हैं। जैन धर्म की "अहिंसा परमो धर्मः" भावना ने उनके नैतिक जीवन को आकार दिया, जबकि अनेकांतवाद ने उन्हें सत्य के प्रति सहिष्णु और संवादात्मक दृष्टि प्रदान की। बौद्ध दर्शन की करुणा और आत्मानुशासन ने गांधी के सत्याग्रह को नैतिक गहराई दी। गांधी के शब्दों में, *"The best way to find yourself is to lose yourself in the service of others."*[3] यह कथन उनके 'सेवा के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार' के आदर्श को व्यक्त करता है। इस प्रकार गीता, जैन और बौद्ध विचारों का संगम गांधी के मानवतावाद को आत्मशुद्धि, लोककल्याण और अहिंसा के समन्वित दर्शन के रूप में स्थापित करता है।
- **पश्चिमी मानवतावाद से भिन्नता—** गांधी का मानवतावाद पश्चिमी पुनर्जागरण परंपरा से भिन्न है। जहाँ पश्चिमी मानवतावाद ने मनुष्य को तर्क और स्वायत्तता का प्रतीक माना, वहीं गांधी ने उसे नैतिक और आध्यात्मिक सत्ता के रूप में देखा। उन्होंने कहा— "पश्चिम ने मनुष्य को शक्तिशाली तो बनाया, पर नैतिक नहीं।" गांधी का मानवतावाद कर्तव्य-प्रधान है, जिसमें आत्मसंयम और सार्वभौमिक कल्याण सर्वोच्च मूल्य हैं। वह व्यक्ति की स्वतंत्रता को स्वीकार करता है, पर उसे समाज और ईश्वर के प्रति उत्तरदायित्व से जोड़ता है।

पश्चिमी मानवतावाद जहाँ प्रकृति से मनुष्य को पृथक देखता है, वहीं गांधी ने उसे प्रकृति का अंग माना। उनका मानवतावाद "सर्वोदय" की भावना पर आधारित है—जिसमें आत्मा की एकता, करुणा, सत्य और अहिंसा के माध्यम से संपूर्ण मानवता के कल्याण का संदेश निहित है। इस प्रकार गांधी का मानवतावाद भारतीय आध्यात्मिकता और पश्चिमी विवेकशीलता का संतुलित रूप है, जो मनुष्य को न केवल विचारशील, बल्कि नैतिक और करुणाशील अस्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

सत्य की दार्शनिक आधारभूमि—

महात्मा गांधी के समूचे दर्शन की केन्द्रीय धुरी 'सत्य' है। उनके लिए सत्य केवल एक नैतिक आदर्श या आचार-सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन का सर्वोच्च मूल्य और परम सत्ता का प्रतीक है। गांधी ने कहा था— *"सत्य ही ईश्वर है"* और *"ईश्वर ही सत्य है"*— यह दोनों कथन उनके विचारों की सार्थकता को व्यक्त करते हैं। गांधी के लिए सत्य किसी बाह्य, सैद्धांतिक या दार्शनिक संकल्पना मात्र नहीं, बल्कि एक जीवित अनुभव है, जो व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक कर्म, विचार और उद्देश्य में प्रकट होना चाहिए। वे मानते थे कि सत्य ही वह प्रकाश है जो मानवता को अंधकार से मुक्ति दिला सकता है। इस प्रकार, गांधी का सत्य-दर्शन आत्मानुभव, नैतिकता और सार्वभौमिक करुणा पर आधारित एक जीवंत जीवन-दृष्टि है। सत्य की दार्शनिक समझ गांधी के चिंतन में गहराई से भारतीय अध्यात्म से जुड़ी हुई है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में 'सत्य' को परम तत्व के रूप में देखा गया है— *"सत्यमेव जयते नानृतम्"* (मुण्डक

उपनिषद्)। उपनिषदों में 'सत्य' केवल वाणी या कथन का सत्य नहीं, बल्कि अस्तित्व का सत्य है। गांधी ने इस दृष्टिकोण को अपने जीवन में आत्मसात किया। उनके लिए सत्य का अर्थ केवल तथ्यों की सत्यता या यथार्थ का बोध नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक शुचिता की स्थिति था। उन्होंने लिखा— *"सत्य वह नहीं जो हमें प्रिय लगे, सत्य वह है जो हमें आत्मिक शांति दे।"* गांधी के सत्य का मूल स्वर आत्मा की निर्मलता, अहंकार का क्षय, और करुणा की अनुभूति में निहित है।

गांधी का 'सत्य' एक ओर व्यक्तिगत साधना का केंद्र है, तो दूसरी ओर सामाजिक परिवर्तन का साधन भी। व्यक्तिगत सत्य उनके लिए आत्म-साक्षात्कार का मार्ग है, जो व्यक्ति को ईमानदारी, आत्मानुशासन और निष्ठा की ओर प्रेरित करता है। उनका मानना था कि जो व्यक्ति अपने अंतःकरण के प्रति सत्यनिष्ठ नहीं, वह समाज के प्रति भी ईमानदार नहीं हो सकता। इसलिए उन्होंने कहा— *"सत्य की खोज आत्मा की यात्रा है।"* यह यात्रा निरंतर आत्मपरीक्षण, आत्मसंयम और आत्मत्याग से गुजरती है। गांधी के जीवन में यह खोज सत्याग्रह के रूप में मूर्त हुई— ऐसा संघर्ष जो बाह्य सत्ता के विरोध से अधिक, अपने भीतर की दुर्बलताओं के साथ युद्ध था। सामाजिक सत्य गांधी के लिए सामूहिक कल्याण और न्याय के सिद्धांत से जुड़ा है। उन्होंने 'सत्य' को केवल आत्मिक साधना तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सामाजिक संरचना का नैतिक आधार माना। जब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह की शुरुआत की, तब सत्य का अर्थ उनके लिए राजनीतिक या कानूनी नहीं, बल्कि नैतिक शक्ति के रूप में था। गांधी का विश्वास था कि समाज में स्थायी परिवर्तन केवल बाह्य सुधारों से नहीं, बल्कि उस नैतिक चेतना से संभव है जो सत्य पर आधारित हो। इस प्रकार, उनका सत्य-दर्शन व्यक्तिगत और सामाजिक, दोनों स्तरों पर सक्रिय था— एक ओर आत्मशुद्धि का माध्यम और दूसरी ओर सामाजिक न्याय का प्रेरक तत्त्व।

सत्य की यह द्वैध प्रकृति—व्यक्तिगत और सामाजिक—गांधी के मानवतावाद की मूल आत्मा बन जाती है। उन्होंने सत्य को इस प्रकार परिभाषित किया— *"सत्य वह है जो सबके कल्याण में निहित हो।"* यह परिभाषा सत्य को व्यक्तिगत स्वार्थ या सापेक्षता की सीमाओं से ऊपर उठाती है और उसे सार्वभौमिक मूल्य में परिवर्तित करती है। गांधी का सत्य न तो केवल बौद्धिक यथार्थवाद है, न ही केवल धार्मिक आस्था; वह एक नैतिक अनुभव है, जो सभी प्राणियों की एकता और करुणा के भाव से पोषित है। इस अर्थ में उनका सत्य मानवता के प्रति सक्रिय प्रतिबद्धता का प्रतीक है। सत्य और ईश्वर का एकात्म गांधी के दर्शन की सबसे मौलिक विशेषता है। उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि "ईश्वर और सत्य में कोई भेद नहीं है।" यह विचार उन्हें परंपरागत धार्मिक मान्यताओं से अलग दिशा में ले जाता है। पारंपरिक धर्म जहाँ ईश्वर को एक व्यक्तिगत सत्ता या पूजा के विषय के रूप में देखता है, वहाँ गांधी ने ईश्वर को 'सत्य के रूप' में अनुभव किया। उन्होंने लिखा— *"ईश्वर को मैं सत्य के रूप में अनुभव करता हूँ, इसलिए मेरे लिए ईश्वर की आराधना सत्य के पालन में निहित है।"* यह दृष्टिकोण उनके धर्म को कर्म और नैतिकता से जोड़ देता है। गांधी के लिए सत्य की आराधना का अर्थ था— अपने आचरण, विचार और वाणी में पूर्ण सत्यनिष्ठा बनाए रखना।

सत्य और ईश्वर के इस एकात्म का गहरा दार्शनिक अर्थ है। यहाँ ईश्वर कोई बाहरी सत्तामात्र नहीं, बल्कि वह नैतिक चेतना है जो प्रत्येक व्यक्ति के भीतर निहित है। गांधी का यह विचार उपनिषदों के "अहं ब्रह्मास्मि" और "तत्त्वमसि" जैसे वाक्यों से जुड़ता है, जहाँ ईश्वर और आत्मा के बीच कोई द्वैत नहीं माना

गया। सत्य की खोज, वस्तुतः, आत्मा की उसी दिव्यता की खोज है। इसलिए गांधी के लिए सत्य की साधना ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग है, और सत्य का उल्लंघन आत्मा के पतन के समान है। यही कारण है कि उन्होंने कहा— *"सत्य के बिना ईश्वर की खोज असंभव है, क्योंकि ईश्वर सत्य में ही निवास करता है।"* गांधी का सत्य-दर्शन केवल सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक और नैतिक रूप से अत्यंत सक्रिय है। उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र—राजनीति, समाज, शिक्षा और अर्थव्यवस्था—में सत्य को मूल मूल्य के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। उनके सत्य का स्वरूप निरंतर विकसित होता रहा। प्रारंभ में उन्होंने कहा— *"ईश्वर ही सत्य है"* (God is Truth), परंतु अपने जीवनानुभव के अंत में इसे परिवर्तित कर कहा— *"सत्य ही ईश्वर है"* (Truth is God)। इस परिवर्तन में गांधी के आध्यात्मिक विकास की गहराई झलकती है। यहाँ सत्य केवल ईश्वर का गुण नहीं, बल्कि स्वयं ईश्वर का रूप बन जाता है। यह दृष्टिकोण उनके धर्म को किसी मत या आस्था से नहीं, बल्कि नैतिकता और मानवता से जोड़ देता है।

गांधी के सत्य-दर्शन का दार्शनिक मूल्य इस तथ्य में निहित है कि यह सापेक्षताओं के बीच एक नैतिक स्थायित्व की खोज करता है। आधुनिक युग के सापेक्षवादी विचारकों के विपरीत, गांधी ने सत्य को निरपेक्ष माना, परंतु उसके अनुभव को व्यक्तिगत साधना के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार सत्य का अनुभव प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न हो सकता है, क्योंकि सत्य की पूर्णता केवल परमात्मा के पास है। इसीलिए उन्होंने कहा— *"मेरी सत्य की समझ सीमित है, मैं उसकी खोज में हूँ।"* इस स्वीकारोक्ति में गांधी के दर्शन की विनम्रता और आत्म-संशोधन की भावना निहित है। सत्य की यह निरंतर खोज ही उनके जीवन का धर्म बन गई थी। अंततः, गांधी का 'सत्य' एक ऐसा सार्वभौमिक नैतिक मूल्य है जो मानवतावाद की आत्मा का निर्माण करता है। यह सत्य आत्मा की पवित्रता, समाज की नैतिकता और ईश्वर की अनुभूति—तीनों को एक सूत्र में बाँध देता है। गांधी ने यह प्रतिपादित किया कि जब व्यक्ति सत्य के अनुरूप जीवन जीता है, तब वह न केवल अपनी आत्मा का उद्धार करता है, बल्कि संपूर्ण समाज की नैतिक उन्नति का कारण बनता है। इस प्रकार, सत्य गांधी के लिए केवल दार्शनिक अवधारणा नहीं, बल्कि मानव जीवन की दिशा निर्धारित करने वाला शाश्वत सिद्धांत है— एक ऐसा सिद्धांत जो उनके समूचे मानवतावाद की आत्मा के रूप में स्थित है।

अहिंसा की दार्शनिक आधारभूमि —

महात्मा गांधी के मानवतावाद की आत्मा जितनी गहराई से 'सत्य' में निहित है, उतनी ही शक्ति 'अहिंसा' के सिद्धांत में विद्यमान है। सत्य और अहिंसा गांधी के जीवन तथा दर्शन के दो आधारस्तंभ हैं, जिन पर उनके समस्त नैतिक, धार्मिक और सामाजिक चिंतन का निर्माण हुआ। गांधी के लिए अहिंसा कोई नकारात्मक अवधारणा नहीं, अर्थात केवल हिंसा का अभाव नहीं, बल्कि एक सक्रिय, सृजनात्मक और प्रेममय शक्ति है जो आत्मा की गहराई से उत्पन्न होकर मानवता की ओर प्रवाहित होती है। उनका विश्वास था कि *"Ahimsa is the highest duty. Even if we cannot practice it in full, we must try to understand its spirit and refrain as far as humanly possible from violence."*[4] अर्थात अहिंसा केवल बाह्य आचरण नहीं, बल्कि आत्मिक अनुशासन से उपजा नैतिक धर्म है, जो मानवता की सर्वोच्च शक्ति बनकर उभरता है। गांधी की अहिंसा की जड़ें भारतीय दार्शनिक परंपरा में गहराई तक जुड़ी हैं। उपनिषद, जैन, बौद्ध और गीता के विचारों में निहित करुणा, समता और आत्मसंयम के तत्त्व उनके चिंतन का आधार बने। जैन धर्म के "अहिंसा परमो धर्मः" सिद्धांत

को उन्होंने साधु-संन्यासी की मर्यादा से निकालकर सामाजिक और राजनीतिक जीवन में उतार दिया। उनके अनुसार, "अहिंसा केवल संन्यासी का धर्म नहीं, बल्कि हर मनुष्य के जीवन का नैतिक नियम है।" इस प्रकार, गांधी की अहिंसा आत्मशुद्धि से लेकर सामाजिक न्याय की प्रक्रिया तक का आधार बनती है।

- **अहिंसा के रूप में सक्रिय प्रेम:** गांधी के लिए अहिंसा का सर्वोच्च रूप प्रेम है। उन्होंने कहा — "अहिंसा का सार प्रेम है; प्रेम के बिना अहिंसा मृत है।" यह प्रेम केवल करुणा नहीं, बल्कि विरोधी के प्रति भी सम्मान और समझ का भाव है। उनके अनुसार, जब व्यक्ति दूसरे के दुःख को अपना समझने लगता है, तभी वह सच्चा अहिंसक बनता है। गांधी का यह दृष्टिकोण अहिंसा को निष्क्रियता से मुक्त करता है और उसे आत्मबल, साहस और सृजनशीलता का प्रतीक बनाता है। वे कहते थे — "अहिंसा निष्क्रिय नहीं, वीरों का धर्म है।" प्रेम उनके लिए ईश्वर की अभिव्यक्ति था; इसलिए अहिंसा भी ईश्वर-भक्ति का एक रूप है।
- **नैतिकता, सह-अस्तित्व और करुणा का दर्शन:** गांधी की अहिंसा सामाजिक नैतिकता की आधारशिला है। वे मानते थे कि आधुनिक सभ्यता का संकट नैतिक संतुलन के अभाव में है, और इसका समाधान अहिंसा में निहित है। अहिंसा व्यक्ति को आत्मसंयम, सहिष्णुता और करुणा की दिशा में अग्रसर करती है। गांधी का "सह-अस्तित्व" का सिद्धांत इसी भावना से उत्पन्न हुआ— "यदि हम दूसरों के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करेंगे, तो हम स्वयं अपने अस्तित्व का अर्थ खो देंगे।" सत्याग्रह के माध्यम से उन्होंने दिखाया कि अहिंसा केवल विरोध का साधन नहीं, बल्कि संवाद और नैतिक पुनर्निर्माण का माध्यम है। करुणा गांधी के अनुसार वह आत्मिक शक्ति है जो मनुष्य को स्वार्थ से मुक्त कर सार्वभौमिक कल्याण की दिशा में प्रेरित करती है।
- **सत्य और अहिंसा का परस्पर संबंध:** गांधी के अनुसार, *"Truth is my goal; Ahimsa is the means to achieve it."*[5] यह कथन उनके समग्र नैतिक ढाँचे की दिशा को स्पष्ट करता है, जहाँ सत्य अंतिम लक्ष्य है और अहिंसा उसकी प्राप्ति का साधन। सत्य और अहिंसा एक-दूसरे के पूरक हैं — सत्य के बिना अहिंसा दिशाहीन है, और अहिंसा के बिना सत्य कठोर बन जाता है। सत्याग्रह इसी संबंध का मूर्त रूप है, जहाँ व्यक्ति असत्य और अन्याय का विरोध हिंसा से नहीं, बल्कि आत्मबल और नैतिक शक्ति से करता है। गांधी के लिए यह संघर्ष प्रतिशोध नहीं, बल्कि हृदय -परिवर्तन का प्रयास है। दार्शनिक रूप से, सत्य आत्मा का गुण है और अहिंसा उसका व्यवहारिक रूप। जब व्यक्ति अहिंसा का पालन करता है, तो वह अपने भीतर की दिव्यता को जाग्रत करता है — यही उसकी सच्ची धार्मिकता है।

इस प्रकार, गांधी की अहिंसा एक सार्वभौमिक नैतिक मूल्य है, जो सत्य की साधना का साधन बनकर मानवता की आत्मा का स्वरूप ग्रहण करती है। यह दर्शन सिखाता है कि सच्ची शक्ति हिंसा में नहीं, बल्कि आत्मसंयम, प्रेम और करुणा में निहित है— और यही गांधी के मानवतावाद की वास्तविक आधारभूमि है।

गांधी के मानवतावाद की समकालीन प्रासंगिकता—

महात्मा गांधी का मानवतावाद किसी विशेष कालखंड की विचारधारा नहीं है, बल्कि यह एक सतत् नैतिक प्रक्रिया है जो हर युग में मानवता के पुनर्निर्माण की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है। बीसवीं सदी के प्रारंभ में जब सभ्यता ने औद्योगिक प्रगति और भौतिक विकास के नाम पर हिंसा, उपनिवेशवाद

और मानव शोषण को सामान्य बना लिया था, उस समय गांधी का सत्य और अहिंसा पर आधारित मानवतावाद एक वैकल्पिक सभ्यता की दृष्टि के रूप में सामने आया। इक्कीसवीं सदी के इस दौर में—जब मानवता पुनः नैतिक, आध्यात्मिक और पारिस्थितिक संकट से जूझ रही है—गांधी का दर्शन पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। आधुनिक विश्व में नैतिकता का संकट, भौतिक उपभोग की अंधी दौड़, पर्यावरणीय असंतुलन, वैश्वीकरण की असमानताएँ और सामाजिक अन्याय की स्थितियाँ उस समय के समान ही चुनौतीपूर्ण हैं, जिनका समाधान गांधी के मानवतावादी दृष्टिकोण में निहित है।

गांधी के मानवतावाद की सबसे बडी विशेषता यह है कि वह व्यक्ति के भीतर से परिवर्तन की शुरुआत का आग्रह करता है। गांधी का मानना था कि सामाजिक सुधार या राजनीतिक परिवर्तन तभी सार्थक है जब व्यक्ति के भीतर नैतिक चेतना जागृत हो। उन्होंने कहा था, *"Be the change that you wish to see in the world"* — यह वाक्य गांधी दर्शन की आत्मा है। आज जब समाज में मूल्य-अपेक्षा और नैतिक पतन की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तब गांधी का यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है कि मानव सभ्यता का वास्तविक उत्थान केवल बाहरी प्रगति से नहीं, बल्कि आत्मिक शुद्धि और नैतिक सशक्तिकरण से संभव है। गांधी का मानवतावाद इस दृष्टि से केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि मानवता के पुनर्निर्माण का व्यावहारिक मार्गदर्शन है। आधुनिक युग में वैश्वीकरण (Globalization) ने जहाँ आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा दिया है, वहीं उसने सांस्कृतिक विविधता, श्रम-शोषण और असमानता को भी गहरा किया है। गांधी के "स्वदेशी" और "सर्वोदय" के सिद्धांत इन असंतुलनों का नैतिक समाधान प्रस्तुत करते हैं। "स्वदेशी" का अर्थ गांधी के लिए आत्मनिर्भरता, स्थानीयता और आत्म-संयम था, न कि संकीर्ण राष्ट्रवाद। उन्होंने यह संदेश दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और समाज के संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करना चाहिए कि दूसरों के अधिकारों का हनन न हो। यह विचार आज के वैश्विक पूँजीवादी युग में मानवतावाद की पुनःस्थापना की आधारशिला बन सकता है। इसी प्रकार "सर्वोदय"—अर्थात् सबका विकास—के माध्यम से गांधी ने सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता की दिशा में एक मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

पर्यावरणीय संकट (Environmental Crisis) के संदर्भ में भी गांधी का दर्शन अत्यंत सामयिक है। गांधी ने अपने समय में ही चेताया था कि "पृथ्वी हर व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम है, परंतु किसी एक व्यक्ति के लोभ को नहीं।" यह कथन आज के जलवायु संकट, संसाधनों के दोहन और उपभोक्तावाद के दौर में गहरी प्रासंगिकता रखता है। गांधी का मानवतावाद प्रकृति और मानव के बीच सह-अस्तित्व (Co-existence) का दर्शन प्रतिपादित करता है। उनके लिए मनुष्य केवल पर्यावरण का उपभोक्ता नहीं, बल्कि उसका नैतिक संरक्षक है। गांधी का यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरण नैतिकता (Environmental Ethics) का पूर्वाभास है, जो यह सिखाता है कि प्रकृति के प्रति करुणा और सम्मान ही सच्चे मानवतावाद की पहचान है। सामाजिक न्याय (Social Justice) के क्षेत्र में गांधी का योगदान उनके मानवतावाद का सबसे सशक्त आयाम है। उन्होंने हरिजन आंदोलन, अस्पृश्यता-उन्मूलन और ग्रामीण पुनर्निर्माण के माध्यम से यह दिखाया कि मानवतावाद केवल चिंतन का विषय नहीं, बल्कि कर्म का मार्ग है। गांधी का यह विश्वास था कि समाज की वास्तविक उन्नति तभी संभव है जब सबसे कमजोर व्यक्ति भी सम्मान और समान अवसर प्राप्त करे। यह विचार आधुनिक मानवाधिकार (Human Rights) की अवधारणा से गहराई से जुड़ा हुआ है। आज जब समाज में वर्ग, जाति, लिंग और आर्थिक

असमानता के रूप में विभाजन बढ़ रहे हैं, तब गांधी का यह संदेश कि "जिससे तुम्हारा हृदय द्रवित हो, वही तुम्हारा धर्म है"—मानवतावादी नैतिकता का सर्वोच्च मानक प्रस्तुत करता है।

नैतिकता और मानवीय मूल्यों (Ethics and Human Values) के क्षेत्र में गांधी का दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक था। उन्होंने नैतिकता को धार्मिकता का पर्याय नहीं माना, बल्कि मानव-कल्याण का नैतिक नियम कहा। आज जब तकनीकी प्रगति के बावजूद मनुष्य के भीतर संवेदना का ह्रास हो रहा है, तब गांधी का यह कथन अत्यंत अर्थपूर्ण प्रतीत होता है—"नैतिकता के बिना मनुष्य का अस्तित्व केवल शारीरिक यांत्रिकी है।" उनका मानवतावाद एक ऐसी नैतिक चेतना का प्रतिपादन करता है जिसमें सत्य, करुणा, समानता और सह-अस्तित्व के मूल्य जीवन का आधार बन जाते हैं। समकालीन समाज में गांधी के मानवतावाद की उपयोगिता केवल वैचारिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक भी है। राजनीति में सत्य और पारदर्शिता, समाज में सहिष्णुता और करुणा, अर्थनीति में संतुलन और पर्यावरण में संरक्षण—ये सभी क्षेत्र गांधी के दर्शन से नई दिशा पा सकते हैं। गांधी का मानवतावाद हमें यह सिखाता है कि विकास का अर्थ केवल उत्पादन या उपभोग नहीं, बल्कि वह प्रक्रिया है जो मानवता को अधिक मानवीय बनाती है।

अंततः, गांधी का मानवतावाद आज के युग में एक नैतिक मार्गदर्शक (Moral Compass) की तरह कार्य करता है। जब मानवता तकनीकी चमत्कारों के बीच अपनी आत्मा खो रही है, तब गांधी का यह संदेश कि "मनुष्य का धर्म मनुष्य होना है"—सभी युगों के लिए शाश्वत सत्य बन जाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि गांधी का मानवतावाद केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की नैतिक पुनर्संरचना की आधारशिला है। यह दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना गांधी के समय में था, क्योंकि यह मानवता को आत्म-चिंतन, संयम और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है — एक ऐसा मार्ग जो व्यक्ति, समाज और प्रकृति, तीनों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।

निष्कर्ष—

महात्मा गांधी का मानवतावाद सत्य और अहिंसा के शाश्वत मूल्यों पर आधारित एक ऐसा जीवनदर्शन है जो व्यक्ति, समाज और मानवता के समग्र उत्थान की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है। गांधी ने 'सत्य' को परम मूल्य और 'अहिंसा' को उसकी व्यावहारिक अभिव्यक्ति माना, जिसके माध्यम से उन्होंने नैतिकता, करुणा और सह-अस्तित्व पर आधारित मानव सभ्यता की परिकल्पना की। उनका मानवतावाद केवल वैचारिक नहीं, बल्कि कर्मप्रधान दर्शन है, जो आत्मशुद्धि के माध्यम से सामाजिक और वैश्विक परिवर्तन की संभावना को उद्घाटित करता है। समकालीन युग के नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय संकटों के संदर्भ में गांधी का यह दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, क्योंकि यह मनुष्य को आत्मसंयम, सत्यनिष्ठा और सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। अतः गांधी का मानवतावाद मानवता के पुनर्निर्माण का नैतिक और दार्शनिक आधार प्रस्तुत करता है, जो हर युग में शांति, समानता और करुणा का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

Endnotes

1. Gandhi, M. K. An Autobiography: The Story of My Experiments with Truth. Translated by Mahadev Desai, Navajivan Publishing House, 1927, p. 318.
2. Gandhi, Mohandas K. The Wit and Wisdom of Gandhi. Edited by Homer A. Jack, Courier Corporation, 2005, p. 30.

3. Gandhi, M. K. The Words of Gandhi. Selected and Edited by Richard Attenborough, Newmarket Press, 1982, p. 45.
4. Gandhi, M. K. *The Collected Works of Mahatma Gandhi*. Vol. 23, Publications Division, Government of India, 1967, p. 411.
5. Gandhi, M. K. *An Autobiography: The Story of My Experiments with Truth*. Translated by Mahadev Desai, Navajivan Publishing House, 1927, p. 504.

Bibliography

- Chakrabarti, Mohit. *Gandhian Humanism*. Kanishka Publishers & Distributors, 2003.
- Chakrabarty, Bidyut. *Humanizing Humanity: Tagore, Gandhi and Ambedkar*. Bloomsbury Academic India, 2024.
- Erikson, Erik H. *Gandhi's Truth: On the Origins of Militant Nonviolence*. W. W. Norton & Company, 1969.
- Fischer, Louis. *Gandhi*. Harcourt, Brace & World, 1950.
- Gandhi, Mahatma. *An Autobiography or The Story of My Experiments with Truth*. Translated by Mahadev Desai, Critical Edition, Penguin Random House India, 2018.
- Gandhi, Mohandas K. *Hind Swaraj or Indian Home Rule*. Navajivan Publishing House, 1909.
- Gandhi, Mohandas K. *The Collected Works of Mahatma Gandhi*. 100 vols., Publications Division, Government of India, 1958–1994.
- Guha, Ramachandra. *Gandhi: The Years That Changed the World, 1914–1948*. Penguin Allen Lane, 2018.
- Guha, Ramachandra. *Gandhi's Faith and Ours*. Allen Lane, 2013.
- Iyer, Raghavan. *The Moral and Political Thought of Mahatma Gandhi*. Oxford University Press, 1973.
- Jahanbegloo, Ramin. *Mahatma Gandhi: A Nonviolent Perspective on Peace*. Routledge India, 2021.
- Joshi, Vidyut. *Gandhian Humanism in Praxis*. Rawat Publications, 2022.
- Lal, Vinay, editor. *Gandhi, Truth, and Nonviolence: The Politics of Engagement in Post-Truth Times*. Oxford University Press, 2025.
- Lelyveld, Joseph. *Great Soul: Mahatma Gandhi and His Struggle with India*. Alfred A. Knopf, 2011.
- Lindley, Mark. *Gandhi and Humanism*. Lexington Books, 2018.
- Mehta, Usha. *Mahatma Gandhi and Humanism*. Bharatiya Vidya Bhavan, 2000.
- Prabhu, R. K., and U. R. Rao, editors. *The Mind of Mahatma Gandhi (Encyclopaedia of Gandhi's Thoughts)*. Navajivan Trust, Ahmedabad, 1960.
- Sattar, S. Abdul. *Humanism of Mahatma Gandhi and M. N. Roy*. The Associated Publishers, 2007.

——